करता हूँ मैं तेरी चिन्ता   
तू क्यों चिन्ता करता हैं   
आसुओं की घाटियों में   
हाथ न छोडूंगा तेरा (2)

1 मेरी महिमा तू देखेगा   
खुद को मेरे हाथो में देदे (2)   
मेरी शक्ति मैं तुझको देता हूँ   
चलाऊँगा हर दिन इसी जगह में (2)

2 सभी तुझको भूलेंगे थो भी   
क्या मैं तुझको भूलूँगा कभी (2)   
अपने हाथों में तुझे उठाकर   
चलाऊँगा हर दिन मेरी कृपा में (2)

3 अब्रहाम का मैं परमेशवर हूँ   
अध्बुत कार्य क्यूँ न करूँगा (2)   
लाल सागर में रसता दिया   
आज भी मैं करने के योग्य हूँ (2)